Research Ambition
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed & Open Access) **Journal home page:** www.researchambition.com
ISSN: 2456-0146, Vol. 10, Issue-I, May 2025

छत्तीसगढ़ की लोककला और परंपराओं का संरक्षण एवं पुनरुद्धार में सामुदायिक रेडियो की भूमिका विशेषतः रेडियो रमन के संदर्भ में (The role of community radio in the preservation and revival of Chhattisgarh's folk art and traditions, with special reference to Radio Raman)

Shweta Pandey, [a*] **Dr. Shailendra Singh,** [b**]

[a] *Research Scholar, Journalism and Mass Communication, Rabindranath Tagore University, Bhopal, Madhya Pradesh (India).*

[b] *Research Guide, Rabindranath Tagore University, Bhopal, Madhya Pradesh (India).*

KEYWORDS

सांस्कृतिक विरासत, लोककला, लोकसाहित्य, परंपरायें

ABSTRACT

भारत अपनी समृद्ध कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहाँ के 28 राज्य अपनी विशिष्ट लोककला, लोकसाहित्य और परंपराओं के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। जब विभिन्न भाषाओं, कलाओं और संस्कृतियों से समृद्ध लोग एक मंच पर आकर अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का आदान–प्रदान करते हैं, तब ''एक भारत, श्रेष्ठ भारत'' की संकल्पना साकार होती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, भारतीय कला और परंपराओं का संरक्षण और पुनरुद्धार अत्यंत आवश्यक हो गया है ताकि आने वाली पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी रह सके। देश में विभिन्न माध्यमों से भारतीय भाषा, कला, संस्कृति और साहित्य के संरक्षण और पुनरुद्धार पर निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। भारत जैसे विशाल सांस्कृतिक देश में हर 10 किलोमीटर की दूरी पर भाषा, बोली और संस्कृति में विविधता देखने को मिलती है, जिससे यह आवश्यक हो जाता है कि इन बहुआयामी कला और परंपराओं का संरक्षण किया जाए। इस दिशा में भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने सामुदायिक रेडियो को शिक्षा, सूचना और मनोरंजन के साथ–साथ स्थानीय लोककला और परंपराओं के संरक्षण का माध्यम बनाने का निर्देश दिया है। इसी क्रम में, डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो ''रेडियो रमन'' ने छत्तीसगढ़ की लुप्तप्राय लोकगाथाओं और लोकगीतों के संरक्षण की दिशा में प्रभावी कार्य किया है। इसके माध्यम से प्रदेश की पारंपरिक लोककला को संरक्षित करने के साथ–साथ स्थानीय समुदाय को उनकी सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराने का कार्य किया जा रहा है, जिससे नई पीढ़ी अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए प्रेरित हो सके।

प्रस्तावना

डॉ. सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय में स्थापित सामुदायिक रेडियो रेडियो रमन न केवल शिक्षा और जागरूकता का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि यह स्थानीय समुदाय की आवाज बनकर उनकी संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक विकास को भी प्रोत्साहित कर रहा है। यह रेडियो अपनी प्रसारण सामग्री में स्थानीय बोली–भाषा का प्रयोग कर समुदाय से गहरे स्तर पर जुड़ता है, जिससे लोगों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने की प्रेरणा मिलती है। कोटा, जो कि एक आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र है, यहां

>Corresponding author
****E-mail:** spshwetapandey78@gmail.com (Shweta Pandey). https://orcid.org/0009-0007-9089-6136
DOI: https://doi.org/10.53724/ambition/v10n1.03
Received 27th Feb. 2025; Accepted 25th April 2025
Available online 30th May 2025
2456-0146 /© 2025 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

की जनजातियाँ और अन्य स्थानीय समुदाय अपनी परंपराओं, लोक कलाओं और सांस्कृतिक धरोहरों को संजोकर रखे हुए हैं। खासकर वाचिक परंपरा में संचित उनकी लोक गाथाएँ, लोक गीत और पौराणिक कथाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही हैं। लेकिन बदलते समय और आधुनिकता के प्रभाव में यह अनमोल विरासत धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। यदि इन कलाओं को संरक्षित नहीं किया गया, तो यह अमूल्य धरोहर काल के गर्त में समा जाएगी और आने वाली पीढ़ियाँ अपनी जड़ों से कट जाएँगी।

छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति अत्यंत समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यहाँ के लोकगीतों, लोकगाथाओं, पारंपरिक संगीत शैलियों और वाद्य यंत्रों में जीवन की अनुभूति झलकती है। यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं हैं, बल्कि इनमें समाज के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्य समाहित हैं। छत्तीसगढ़ी बोली–भाषा के माध्यम से कुछ विशेष जातियाँ अपनी विशिष्ट शैली में इन गीतों और गाथाओं का गायन करती हैं, जो न केवल मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि समुदाय की पहचान को भी जीवंत रखता है।

ऐसे में रेडियो रमन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह रेडियो चौनल न केवल शिक्षा और जागरूकता के कार्यक्रम प्रसारित करता है, बल्कि लोक कला और परंपराओं को भी मंच प्रदान कर रहा है। यह लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने, उनकी रचनाओं को संरक्षित करने और जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने का कार्य कर रहा है। इस प्रयास से न केवल छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक परंपरा को संजोया जा सकता है, बल्कि इसे वैश्विक स्तर पर पहचान भी दिलाई जा सकती है।

इस शोध अध्ययन के माध्यम से यह विश्लेषण करने का प्रयास किया जाएगा कि रेडियो रमन किस प्रकार से लोक संस्कृति और पारंपरिक कलाओं के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो रहा है और किस तरह यह आदिवासी तथा अन्य समुदायों को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए प्रेरित कर रहा है।

छत्तीसगढ़ की लोककला एवं परंपराओं की वर्तमान स्थिति

लोककलाओं पर आधुनिकता का प्रभाव– आधुनिक वैश्वीकरण और शहरीकरण के कारण पारंपरिक कलाओं को जीवित रखना एक चुनौती बन गया है। युवा पीढ़ी इनसे विमुख होती जा रही है और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रभाव में नई पीढ़ी लोकसंगीत और पारंपरिक कलाओं के स्थान पर पाश्चात्य संगीत और आधुनिक कला शैलियों को अधिक प्राथमिकता दे रही है।

सरकारी एवं गैर–सरकारी प्रयास– भारत सरकार और विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों ने पारंपरिक कलाओं के संरक्षण के लिए कई योजनाएँ चलाई हैं। लेकिन इन प्रयासों को तब तक पूर्ण सफलता नहीं मिल सकती जब तक इन्हें स्थानीय स्तर पर संरक्षित और प्रचारित न किया जाए। इस दिशा में सामुदायिक रेडियो विशेष भूमिका निभा सकता है।

सामुदायिक रेडियोः एक प्रभावी माध्यम

सामुदायिक रेडियो, जनसंचार का एक ऐसा माध्यम है जो स्थानीय समुदाय से सीधे जुड़ता है और उनके सांस्कृ –तिक, सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक होता है। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने सामुदायिक रेडियो को शिक्षा, सूचना, मनोरंजन और स्थानीय लोककला एवं परंपराओं को सहेजने के लिए एक प्रभावी माध्यम के रूप में विकसित करने का निर्देश दिया है।

छत्तीसगढ़ में रेडियो रमन एक ऐसा ही सामुदायिक रेडियो स्टेशन है, जिसने लोककलाओं को संरक्षित करने और स्थानीय कलाकारों को मंच प्रदान करने में अग्रणी

भूमिका निभाई है। रेडियो रमन के माध्यम से प्रतिदिन छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति को समर्पित कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। 'छत्तीसगढ़ के लोक रंग' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के लोकगीतों, लोककथाओं एवं पारंपरिक धुनों का नियमित प्रसारण किया जाता है, जिससे इनकी जनसामान्य तक पहुंच बनी हुई है और नई पीढ़ी भी इनसे जुड़ रही है। इसके अतिरिक्त 'छत्तीसगढ़ के तीज–त्यौहार' नामक कार्यक्रम में प्रदेश के पर्व–त्योहारों, उनसे जुड़ी किंवदंतियों, सामाजिक–सांस्कृतिक महत्व और वैज्ञानिक पक्षों की विस्तृत जानकारी दी जाती है। इस क्रम में ग्रामीण क्षेत्रों के बुजुर्गों से वार्ता कर उनके अनुभवों और ज्ञान को दर्ज किया जाता है, जिससे पारंपरिक धरोहरों का दस्तावेजीकरण भी संभव हो पाता है। इस प्रकार, रेडियो रमन न केवल छत्तीसगढ़ की लोककलाओं और परंपराओं के संरक्षण में सहायक है, बल्कि उनके पुनरुद्धार में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

रेडियो रमन की भूमिका

1. देवार गीत का संरक्षण

देवार गीत छत्तीसगढ़ की घुमंतू देवार जनजाति द्वारा गाया जाता है। यह जनजाति अपनी विशिष्ट गायन शैली और पारंपरिक गीतों के लिए जानी जाती है, किंतु मुख्यधारा में स्थान न मिलने के कारण यह कला धीरे–धीरे विलुप्त हो रही थी। रेडियो रमन ने इस कला को पुनर्जीवित किया और देवार समुदाय के कलाकारों को मंच प्रदान किया। इसके अलावा, इन्हें मानदेय भी दिया जाने लगा, जिससे कलाकारों को आर्थिक सहायता मिली और वे इस कला को जीवित रखने के लिए प्रेरित हुए। विश्वविद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में रेडियो रमन के माध्यम से इन कलाकारों को आमंत्रित किया गया, जिससे छात्र भी इस कला को समझ सकें और सराह सकें।

2. बांस गीत का पुनरुद्धार

बांस गीत, छत्तीसगढ़ के एक विशिष्ट क्षेत्र में गाया जाने वाला पारंपरिक लोकगीत है, जो विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच गया था। रेडियो रमन ने इसे मंच प्रदान कर स्थानीय कलाकारों को पुनर्जीवित किया। इसके बाद, इन कलाकारों को अन्य मंच भी मिलने लगे, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे इस कला को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए प्रेरित हुए।

3. अन्य पारंपरिक लोककलाओं का संरक्षण

रेडियो रमन ने छत्तीसगढ़ की कई अन्य पारंपरिक लोककलाओं को संरक्षित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। इनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं:

- **तारे नारे (आल्हा–ऊदल):** वीर रस से भरपूर यह लोकगाथा छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है।
- **रहस्य:** रहस्य लीला, जो मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश में भगवान श्री कृष्णा की लीलाओं पर आधारित एक पारंपरिक नृत्य नाटक है, को अब छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी बोली में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह न केवल स्थानीय कला और संस्कृति को पुनर्जीवित करने का एक प्रयास है, बल्कि यह इस अद्वितीय कला रूप को विश्व के सामने भी लाने की दिशा में एक कदम है।
- कन्नौजे रासलीला मंडली, जो छत्तीसगढ़ के बिल्हा क्षेत्र में निवास करती है, ने इस परंपरा को नए रूप में प्रस्तुत किया है। मंडली ने न केवल भगवान कृष्ण की लीलाओं का चित्रण किया है, बल्कि कंस के दरबार की प्रस्तुतियां भी दी हैं, जिससे यह कला रूप और भी विविधतापूर्ण बन गया है। रेडियो रमन के माध्यम से इस रहस्य लीला की ऑडियो रिकॉर्डिंग की गई है, जो इस कला के संरक्षण और प्रसार का

एक प्रभावी तरीका साबित हो रहा है।

- **पंडवानीः** पंडवानी महाभारत पर आधारित एक विशिष्ट कथा गायन शैली है, जो छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है। इस लोककला को जीवंत बनाए रखने में अनेक कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। छत्तीसगढ़ में झाड़ूराम देवांगन को पंडवानी का पितामह कहा जाता है, जिन्होंने इसकी समृद्ध परंपरा को मजबूत आधार प्रदान किया। इसके पश्चात पद्म विभूषण तीजन बाई ने पंडवानी को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई और छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई।
- पंडवानी की दो प्रमुख शैलियाँ होती हैं, वेदमाती शैली और कापालिक शैली। वेदमाती शैली में कलाकार महाभारत कथा का गायन शांत, सहज और लयबद्ध स्वर में करता है, जबकि कापालिक शैली में अधिक नाटकीयता, हाव–भाव और अभिनय का समावेश रहता है।
- रेडियो रमन ने इस सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रचार–प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चेतन लाल देवांगन, जो एक प्रसिद्ध पंडवानी कथा गायक हैं, उन्होंने वेदमाती शैली को अपनाया है और इस पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। रेडियो रमन के माध्यम से उनका साक्षात्कार प्रसारित किया गया, जिसमें उन्होंने इस कला की बारीकियों और इसकी परंपरा को आगे बढ़ाने के अपने प्रयासों पर प्रकाश डाला।
- इसके अतिरिक्त, स्थानीय कलाकारों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से, रेडियो रमन ने कापालिक शैली के एक युवा पंडवानी कथा गायक ''रशनी वर्मा'' की रिकॉर्डिंग की और उन्हें मंच प्रदान किया। इससे न केवल उनकी कला को संजोने और संरक्षित करने का कार्य हुआ, बल्कि उनके प्रदर्शन को व्यापक श्रोताओं तक पहुँचाने में भी सहायता मिली।
- **रासगौराः** छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोकसंस्कृति में लोकगीतों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इनमें रास और गौरा लोकगीत विशेष स्थान रखते हैं, जो जनमानस की धार्मिक आस्था, सामाजिक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों को संजोए हुए हैं।

विशेषताएँः

1. **धार्मिक और आध्यात्मिक स्वरूप–** रास गीत मुख्य रूप से कृष्ण भक्ति से जुड़े होते हैं, जिनमें भक्तिरस की प्रधानता होती है।
2. **संगीत और नृत्य का संगम–** रास गीतों का गायन अक्सर समूह में होता है, जहां महिलाएँ और पुरुष नृत्य करते हुए इसे प्रस्तुत करते हैं।
3. **कथा–वाचन शैली–** गीतों में भगवान कृष्ण के बालपन, गोवर्धन उठाने की कथा, कंस–वध, और रासलीला का वर्णन होता है।
4. **लोकवाद्य प्रयोग–** रास गीतों में ढोलक, मंजीरा, हारमोनियम, और करताल जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

रास गीत मुख्य रूप से दीपावली, होली और जन्माष्टमी के अवसर पर गाए जाते हैं। छत्तीसगढ़ के गाँवों में इसे रास मंडलियाँ प्रस्तुत करती हैं। वर्तमान में रेडियो रामन जैसे सामुदायिक रेडियो इन गीतों के संरक्षण और प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं।

रेडियो रमन ने इन दुर्लभ लोक कलाओं के संरक्षण की पहल के तहत स्थानीय कलाकारों को मंच प्रदान किया, उनकी प्रस्तुतियों को रिकॉर्ड किया और उन्हें विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में शामिल किया। इससे न

केवल कलाकारों को पहचान मिली, बल्कि युवा पीढ़ी भी इन पारंपरिक कलाओं से परिचित हो सकी। इसके साथ ही, इस मंच के माध्यम से पंडवानी जैसी समृद्ध लोककला को डिजिटल माध्यमों में संग्रहित कर संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है, ताकि भविष्य की पीढ़ियाँ भी इस अनमोल धरोहर से परिचित रह सकें।

रेडियो रामन के माध्यम से छत्तीसगढ़ के लोकगीतों का संरक्षण और प्रचार–प्रसार किया जाता है, जो इस क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को संजीवनी देने जैसा है। छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकगीतों जैसे सुआ, कर्मा, ददरिया, पंथी और अन्य पारंपरिक गीतों की रिकॉर्डिंग की जाती है और इन्हें रेडियो के माध्यम से प्रसारित किया जाता है, जिससे ये लोककला रूपी धरोहर समूचे क्षेत्र में फैलती है। इन गीतों का हर प्रसारण न केवल छत्तीसगढ़ के आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के साथ जोड़ता है, बल्कि नई पीढ़ी को भी अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। इस प्रक्रिया में लोककलाकारों को मंच प्रदान किया जाता है, और उन्हें उनके नाम से पहचान मिलने के साथ–साथ उनके संगीत की व्यापकता भी बढ़ती है। खासकर ऐसे गीत, जो समय के साथ विलीन होने के कगार पर थे, अब इन्हें रेडियो पर सुनकर नई उम्मीद जगी है। उदाहरण के तौर पर सुआ, कर्मा, ददरिया, पंथी जैसे गीत अब केवल पारंपरिक कार्यक्रमों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे एक राष्ट्रीय मंच तक पहुंच रहे हैं, जहां कलाकारों को सम्मान और पहचान मिल रही है। रेडियो रामन ने इन लोक गीतों की निरंतरता बनाए रखने के साथ–साथ उन्हें नए आयामों तक पहुंचाने का कार्य किया है। इन गीतों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की संस्कृति को जीवित रखा गया है और इसका प्रचार–प्रसार एक साझा पहचान और गर्व का कारण बन गया है।

अध्ययन की कार्यप्रणाली

इस शोध में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों शोध विधियों का उपयोग किया गया है।

1. प्राथमिक स्रोत

- रेडियो रमन द्वारा संरक्षित लोककलाओं के कलाकारों से साक्षात्कार
- श्रोताओं और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ
- रेडियो कार्यक्रमों की समीक्षा

2. द्वितीयक स्रोत

लोककलाओं पर प्रकाशित शोध–पत्र और पुस्तकें

सरकार और गैर–सरकारी संगठनों की रिपोर्टें

निष्कर्ष

सामुदायिक रेडियो, विशेष रूप से रेडियो रमन, ने छत्तीसगढ़ की लोककलाओं के संरक्षण और पुनरुद्धार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह न केवल कलाओं को पुनर्जीवित कर रहा है, बल्कि स्थानीय कलाकारों को आर्थिक सहायता और मंच प्रदान कर उनकी सामाजिक स्थिति को भी सुधार रहा है। विश्वविद्यालयों और विद्यार्थियों को इन पारंपरिक कलाओं से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे नई पीढ़ी इन्हें समझे और इन्हें अपनाए।

यह कार्य न केवल लोक कला के संरक्षण में महत्वपूर्ण है, बल्कि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से संस्कृति को सशक्त बनाने का भी एक प्रेरणास्त्रोत है। रेडियो रमन जैसे प्लेटफॉर्म न केवल परंपरागत कला रूपों को पुनर्जीवित कर रहे हैं, बल्कि वे इन कलाओं को एक नई पहचान और मंच प्रदान कर रहे हैं, जिससे यह न केवल स्थानीय बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचानी जा रही हैं। इस प्रक्रिया को संरक्षित और संरचनात्मक रूप से दस्तावेजित करना भविष्य में इसके पुनरुद्धार और विस्तार के लिए आवश्यक होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इन अमूल्य धरोहरों से जुड़ी रहें और इनकी महत्वता को समझ सकें।

लोकगीतों और लोक कलाओं का संरक्षण एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में अनमोल है, और इनका संरक्षण केवल इन कला रूपों को जीवित रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे समाज की सांस्कृतिक पहचान को भी सशक्त बनाता है। भारतीय कला और परंपराओं का संरक्षण राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के साथ–साथ हमारी सांस्कृतिक विविधता की ताकत को भी दर्शाता है।

रेडियो रमन का योगदान इन सभी प्रयासों में अभूतपूर्व है। इसने लोक गीतों, लोक कथाओं, और परंपराओं को न केवल आधुनिक तकनीकों के माध्यम से संरक्षित किया है, बल्कि स्थानीय कलाकारों को एक मंच प्रदान किया है, जिससे उनकी कला को पहचान मिल रही है। यह कला रूपों को पुनः जीवन देने के साथ–साथ स्थानीय समुदायों के बीच सांस्कृतिक जागरूकता और गौरव को भी बढ़ावा दे रहा है। रेडियो रमन ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामुदायिक रेडियो का प्रभाव केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कला और संस्कृति के संवर्धन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

यह शोध–पत्र इस बात को प्रमाणित करता है कि रेडियो रमन जैसे सामुदायिक रेडियो स्टेशन भारतीय कला और परंपराओं के संरक्षण और पुनरुद्धार में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। यदि इन्हें और अधिक संसाधन एवं मंच उपलब्ध कराए जाएँ, तो भारतीय लोककलाओं को नई ऊर्जा और पहचान मिल सकती है।

सन्दर्भ सूची –

1. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार (2023): ''सामुदायिक रेडियो की नीतियाँ एवं दिशानिर्देश''।
2. छत्तीसगढ़ राज्य सांस्कृतिक विभाग (2022): ''लोककलाओं का संरक्षण एवं पुनरुद्धार''।
3. स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित रेडियो रमन के कार्यक्रमों से संबंधित रिपोर्ट्स।
4. छत्तीसगढ़ के विभिन्न कलाकारों और लोकसंगीत विशेषज्ञों के साक्षात्कार।

****